199 P
754
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1168/1921

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 754

Sa / 2011

* वन्देमातरम् *

सत्याग्रह की लहर

लेखक व प्रकाशकः—

पं० गोकर्ण नाथ शुक्ल
'जीवन'
पुराना कानपुर।

सर्वाधिकार सुरक्षित

नेशनल प्रेस, कानपुर।

S. I. D. STAFF,
CAWNPORE.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 754
Date 20.12.71
GOVT. OF INDIA

891.431
Sh91Sa

※ बन्देमातरम् ※

झंडा महिमा

१]

जनता का चित्त चुराय लिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने।
निज सैनिक दल हरषाय दिया राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने।
भारत अज्ञान भगाया, फिर संघ शक्ति सिखलाया,
आपस की फूट मिटाय दिया राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने।
जो इसके नीचे आया, तो बदली उसकी काया,
सांसारिक मोह हटाय दिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने।
यह सहन शक्ति सिखलाता, कायर को बीर बनाता,
हिय स्वाभिमान उपजाय दिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने।
मत समझो यह निर्बल है, साहस मय अटल प्रबल है,
अरि दल का मान घटाय दिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडे ने।
यह युवक वृद्ध अरु बालक, अबलाओं का प्रतिपालक,
"जीवन" शुभ मार्ग बताय दिया, राष्ट्रीय तिरंगे झंडेने।

क्लेश में है भारत संतान

(२)

देश की सुनलो हे भगवान, क्लेश में हैं भारत सन्तान,
ले निज जन्म जहां पर आए, अन्याइन के मान घटाए,
दुख दरिद्र समस्त हटाए, कीन्ही कृपा महान ॥ देश की०
रक्त विदेशी चूस रहें हैं गो ब्राम्हण को लूट रहे हैं।
पुत्र पिता से छूट रहे हैं, मान सहे अपमान ॥ देश की०
करि अटूट श्रम नित्य कमावें, आधे पेट अन्न नहिं पावें,
पत्नी पुत्र सकल बिल्लावें रहें नित्य हैरान ॥ देश की०
नहीं नित्य प्रति कष्ट सहेंगे, अधिकारों हित अड़ें लड़ेंगे
'जीवन' माया तोड़ बढ़ेंगे, सीखेंगे बलिदान ॥ देश की०
नाथ प्रतीक्षा नहीं करावो, निर्बल के बल आवो आवो,
ले निज शक्ति शत्रु पर धावो, देहु अभय बरदान ॥

देश की सुनलो हे भगवान

क्लेश में हैं भा त संतान

भारत जननि का दुख

(३)

निज पुत्रों की दशा नहीं अब मुझसे देखी जाती है।
रुदन कहाँ तक करू हाय अब फटती मेरी छाती है॥
रक्त विदेशी चूस रहे हैं निर्बल भोले भालों का।
शेष अस्थि पंजर है केवल, आज हमारे लालों का॥
निज कर्म्मों से भारत वीरो, आज विश्व को दिखलादो।
पढ़ो क्रान्ति का पाठ और सब भ्रातावों को सिखलादो॥
प्रलय मचा दो तुम त्रिभुवन में, शंकर से लेकर बरदान।
अन्त होय अन्याय इसलिए आवश्यक हैं तव बलिदान॥
नई सृष्टि हो धर्म्मराज्य को, पुनः शान्ति का हो संचार।
मानव 'जीवन' हो सुखमय निज स्वार्थत्याग सब सीखें प्यार॥

समर में जूझे बहु सरदार

[४]

देश हित तन मन प्राण निसार। करेंगे माता का उद्धार।
कैसी आँधी चली हिन्द में कैसा है यह शोर।
सोते सोते रजनी बीती उठो हो गया भोर॥
बज ' रण भेरी हो तय्यार। करेंगे माता का उद्धार।

सत्याग्रही बनें हम सैनिक, करें देश उपकार।
कवच अहिंसा शांति, सत्य की गहें ढाल तलवार।
समर में जूझे बहु सर्दार। करेंगे माता का उद्धार।
राष्ट्रपति अरु सैनापति सब झेलें कारागार।
हम कायर बन बैठ रहे घर जीवन है धिक्कार।
मिलेगा समय न बारंबार। करेंगे माता का उद्धार।
सैन.पति की सात आज्ञाएँ हम सर पर धार।
तैंतीस कोटि चले करने को भारत का बेड़ा पार।
युद्ध में कभी न मानें हार। करेंगे माता का उद्धार।

भुला देंगे जीवन मरन धीरे धीरे

[५]

हम आज़ाद अपना वतन धीरे२। करेंगे करेंगे यतन धीरे२॥
हम सबों का संगठन अति शीघ्र होना चाहिए।
बैठ घर बनकर के कायर अब न रोना चाहिए॥
दासता की कालिमा साहस से धोना चाहिए।
आखिरी है युद्ध यह इसको न खोना चाहिए॥
लगेगी यही अब रटन धीरे २। हम आज़ाद०
सत्य आग्रह का छिड़ा है युद्ध जो इस देश में।
पुत्र माता के विकल नित ही तड़फते क्लेश में॥

हम "लिबर्टी" लें मिले चाहे किसी भी वेश में।
देश वासी नित चले कांग्रेस के आदेश में॥
यही हो हमारी लगन धीरे धीरे। हम आज़ाद।०
गाँधी जी की प्रतिज्ञाएँ हृदय में धार लें।
दृढ़ अहिंसा ब्रत करें मत तोप अरु तलवार लें॥
पर सभी मैदान में आ कार्य्य और प्रचार लें।
ज़ुल्म ज़ालिम कर रहे सीने पै उनकी मार लें॥
दिखाएँगे कष्ट सहन धीरे धीरे। हम आज़ाद०
थक कभी जायेंगे अपने आप अत्याचार से।
हम न विचलित हो स्वयं रोएंगे वह निज हार से॥
हों निठुर कैसे ही पर जीतेंगे उनको प्यार से।
जान अपनी है छुड़ाना दुश्मने खूंख्वार से॥
किये जांय वो भी दमन धीरे धीरे। हम०
देश में घर घर स्वदेशी वस्तु का व्यवहार हो।
हो बसन भूषण स्वदेशी ही सदा आहार हो॥
इस तरह से ही भला कुछ देश का उपकार हो।
है तमन्ना सब विदेशी बंद कारो बार हो॥
भुला देंगे "जीवन" मरन धीरे धीरे॥ हम०
एक घर से एक सैनिक भी हमें मिल जाय गर।
सोच लें संसार में जीना है बन करके अमर॥

गांधी जी जेल में हैं बन्द अपने जवाहर।
अब न उनकी माँग में रक्खें जरा भी हम कसर॥
चलें सर में बाँधे कफ़न धीरे धीरे।
हम आज़ाद अपना वतन धीरे २

(६)

झंडे के नीचे आओ। फैशन का भूत भगावो॥
अब वस्त्र विदेशी छोड़ो, दासता की कड़ियाँ तोड़ो।
कायरता से मुख मोड़ो, घर फूट शीघ्र ही फोड़ो॥
खादी से प्रेम बढ़ावो, फैशन का भूत भगावो॥
भारत माता दुख पाती, नित ही रोती बिलखाती।
वेदी पर पुत्र पठाती, क्यों तुमको दया न आती॥
आवो न बिलम्ब लगावो। झंडे के नीचे आवो॥
करते जो आप कमाई, लुट जाती पाई पाई।
कैसी यह नीति चलाई, लड़ते हैं भाई भाई॥
हिलमिल कर कदम बढ़ावो। झण्डे के नीचे आवो॥
जब से है राज फिरंगी, हो गई प्रजा सब नंगी।
मिलता है आज न संगी, अब श्रेष्ट हो गये भंगी॥
शैतानी तर्ज मिटावो। फैशन का भूत भगावो॥

(७)

तैय्यार है [illegible] जेल में चक्की चलाने के लिये।
देश हित बलिदान होने सर कटाने के लिये॥

मार डंडों की रहे बौछार गोलो की बहे,
हम वहीं जायेंगे सब सीने अड़ाने के लिये।
हैं दमन में पिस रहे नेता हमारे आजकल,
हम नही काबिल हैं अपने मुंह दिखाने के लिये॥
हम अहिंसक, शांतिमय प्रणवीर अरु रणधीर हैं,
तोड़ दें कानून सब तेरे छकाने के लिये॥
कर चुके "जीवन" समर्पण है शपथ माता यही,
जुट पड़ें सब पुत्र तुझको ही छुड़ाने के लिये॥

माँ का आदेश।

(८)

कृपा कीन्हीं मो पै भगवान।
उठे हैं अब भारत सन्तान॥
जहां पर थी रत्नों की खान, विश्व भरमें जो था धनवान।
वहीं के हा! मजदूर किसान, अन्न बिन रहते हैं हैरान॥
फंसे थे अन्धकार अज्ञान॥ उठे हैं० ॥
महात्मा गान्धी हैं औतार, हरेंगे भारत का भू भार।
सिखाया मातृ भूमि का प्यार, किया नवजीवन का संचार॥
आन पर इनकी देना जान॥ उठे हैं० ॥
इन्होंने भय का भूत भगाय, दंभ आडम्बर दिया मिटाय।
अहिंसा, शान्ति, सत्य सिखलाय, दिया साहस मय मार्ग बताय॥
घटाया है अरि दल का मान॥ उठे हैं० ॥